© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 05 | October - December 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

भारतीय संगीत का विस्तृत इतिहास पर अध्ययन

Dr. Rajender Singh
Lecturer (Music), Jat Sr. Sec. School
email : rajenderbuwana@gmail.com

सार

भारत वर्ष सदैव अपनी संस्कृति के लिए विश्वविख्यात रहा है तथा भारतीय संस्कृति की आधार नींव उसका संगीत है क्योंकि देश की कला उसका संगीत ही देश की संस्कृति की आत्मा व पहचान होती है। भारत में संगीत वैदिक काल से ही धर्म के साथ सम्बद्ध किया गया है, जैसे-जैसे मानव आध्यात्मिकता की ओर बढ़ा है संगीत कला की भी उन्नति हुई है। वैदिक काल से ही संगीत कला तथा संस्कृति को संवर्धित, सुरक्षित तथा प्रसारित करने की परम्परा रही है जिसके लिए वैदिक काल से ही समाज में संगीत उत्सवों का आयोजन विभिन्न नामों तथा स्वरूपों में किया जाता रहा है। इन उत्सवों के माध्यम से ही हम उस युग की संगीत कला, उनकी विधाओ, शैली तथा कलाकारों से परिचित हो पाते हैं।

मुख्य शब्द : भारत, संगीत, समृद्ध, संवर्धित, आध्यात्मिकता, संस्कृति इत्यादि।

प्रस्तावना

संगीत की उत्पत्ति आरम्भ में वेदों के निर्माता ब्रहमाजी द्वारा हुई। ब्रहमाजी ने यह कला शिवजी को दी और शिव के द्वारा देवी सरस्वती को प्राप्त हुई। सरस्वतीजी को इसलिए “वीणा पुस्तक धारिणी” कहकर संगीत और साहित्य की अधिष्ठात्री माना है। सरस्वती जी से संगीत कला का ज्ञान नारदजी को प्राप्त हुआ, नारद जी ने स्वर्ग के गंधर्व, किन्नर एवं अप्सराओं को संगीत शिक्षा दी। वहाँ से ही भरत, नारद और हनुमान आदि ऋषि संगीत कला में पारंगत होकर भूलोक (पृथ्वी) पर संगीतकला के प्रचारार्थ अवतीर्ण हुए।

एक ग्रंथकार के मतानुसार, नारद जी ने अनेक वर्षों तक योग साधना की तब महादेव जी ने उन पर प्रसन्न होकर संगीत कला प्रदान की। पार्वतीजी कि शयन-मुद्रा को देखकर शिव जी ने उनके अंग-प्रत्यंगों के आधार पर रुद्र वीणा बनाएँ और पाँचों मुखों से, पांच रागो की उत्पत्ति की। तत्पश्चात छठा राग पार्वती जी के श्री मुख से उत्पन्न हुआ। शिवजी के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण औरसंत आकाशन्मुख से क्रमशः भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक और श्री राग प्रकट हुए तथा पार्वती द्वारा कौशिक राग की उत्पत्ति हुई। "शिव-प्रदोष" स्तोत्र में लिखा है कि तीन जगत की जननी गौरी को स्वर्गा सिंहासन पर बैठाकर प्रदेश के समय शूलपाणी शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो गए और उनकी स्तुति गान करने लगे। सरस्वती ने वीणा, इंद्र ने वेनु तथा ब्रहमा ने करताल बजाना आरंभ किया, लक्ष्मी जी गाने लगी और विष्णु भगवान मृदंग बजाने लगे। इस नृत्यमय संगीत उत्सव को देखने के लिए गंधर्व, यज्ञ पतग, उरग, सिद्ध, साध्य, विद्याधर, देवता,अप्सरा आदि सभी उपस्थित थे।

संगीत के इतिहास का कालविभाजन

भारतीय संगीत के इतिहास को निम्नांकित 4 भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. अति प्राचीन काल (वैदिक काल) 2000 ईसा सन् पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक।
2. प्राचीन काल- वैदिक संस्कृति परंपरा समाप्त हो जाने के बाद। 1000 ईसा पूर्व से, सन 800 ईसा तक।
3. मध्यकाल (मुस्लिम काल) 800 ईसा से 1800 ईसा तक।
4. आधुनिक काल (अंग्रेजी शासनकाल) 1800 ईसा से 1950 ईसा तक।

(1) अति प्राचीन (वैदिक) काल (2000 ई. पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक)

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 05 | October - December 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

इस वैदिक काल में संगीत का प्रचार था, इसका प्रमाण हमें वेदों से भली प्रकार मिलता है। ऋगवेद में मृदंग, वीणा, वंशी, डमरू आदि वाद्य यंत्रो का उल्लेख मिलता है और सामवेद तो संगीतमय है ही। कहा जाता है कि सामगान में पहले केवल तीन स्वरों का प्रयोग होता था जिनको उदात्त, अनुदात्त और स्वरित कहते थे। आगे चलकर एक-एक करके स्वर और बढ़ते गए और इस वैदिक काल में ही सामगान सप्त स्वरों में होने लगा। इसका प्रमाण सप्तः स्वरास्तु गीयन्ते सामभि: सामगैबु "धै:" माएडूकशित्ता की इस पंक्ति से भी मिलता है।

पाणिणी शिक्षा तथा नारदीय शिक्षा में निम्नलिखित श्लोक मिलता है, जिसके आधार पर सप्त स्वर उनके उदात्त अनुदात्त और स्वरित के अंतर्गत इस प्रकार आते थे:-

उदात्त निषादगंधारौ अनुदात्त रिषभ धैवतो।

स्वरित प्रभावा ह्येते षड्जमध्यम पंचमा।।

(2) प्राचीन काल (1000 ईसा पूर्व से सन 800 ई. तक)

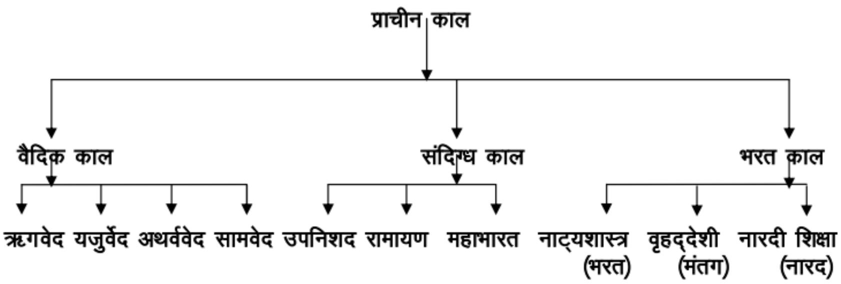

इस समय का पूर्वार्ध भाग अर्थात 1000 ईसा पूर्व से 1 ईसवीं तक का समय पौराणिक और बौद्ध काल के अंतर्गत आता है। इस काल में संगीत का प्रचार किस रूप में रहा ? इसका कोई ठोस प्रमाण तो नहीं मिलता, किंतु उपनिषद् तथा अन्य ग्रंथों के आधार पर इतना कहा जा सकता है कि इस काल में भी संगीत किसी न किसी रूप में चालु अवश्य रहा। इसके बाद अर्थात 1 ई. से 800 ई. तक संगीत कला प्रकाश में आई। इसी काल में भरत ने "नाट्यशास्त्र" नामक प्रसिद्ध ग्रंथ का निर्माण किया एवं अन्य ग्रंथ भी इस काल में लिखे गए। भरत के

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 05 | October - December 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

नाट्यशास्त्र में प्रेरणा पाकर ही इस काल में नाट्य और नृत्य का विशेष प्रचार हुआ। एवं इसी काल में 3 ग्राम, 21 मूर्च्छाना, 7 स्वर और 22 श्रुतियों की प्रणाली का वर्णन भी संगीत ग्रंथों में किया गया।

इसी काल में महाकवि कालिदास (400 ई.) द्वारा संगीत और कविता का प्रचार चारों ओर हो चुका था। राजदरबारों में गायक-वादक सम्मानित होने लगे थे। कालिदास ने अपनी रचनाओं मैं संगीत का पुट देकर आश्चर्यजनक प्रगति की। उस समय कविता और संगीत के सम्मिश्र मैं संगीत में एक नई चेतना जागृत करने का श्रेय महाकवि कालिदास को ही है।

(3) मध्य काल (मुस्लिम काल) (सन् 1100 ई. से 1800 ई. तक)

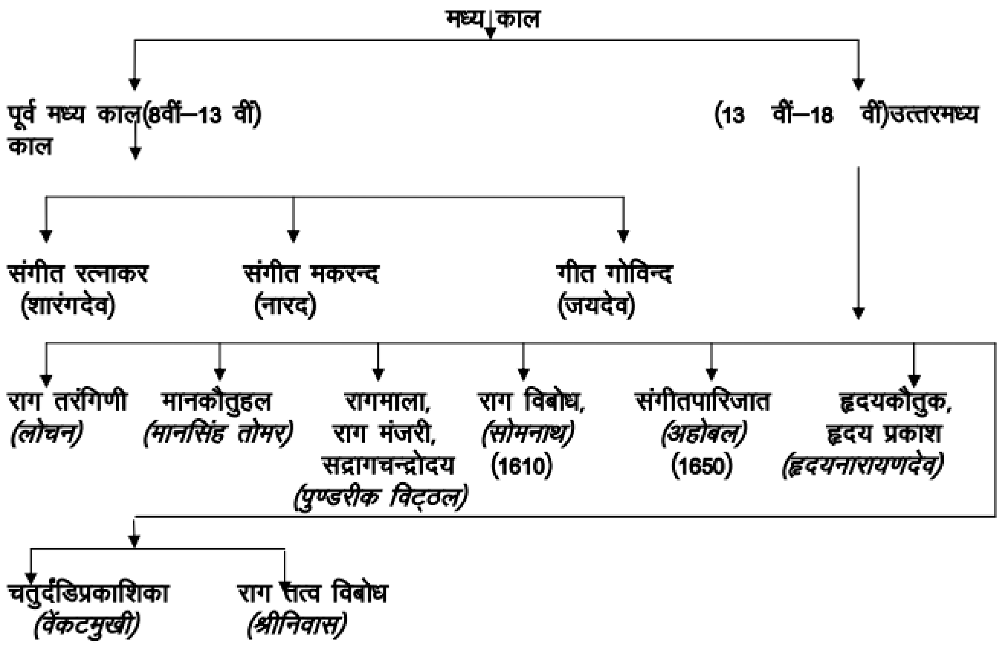

मुसलमानों का आगमन भारत में 11 वीं शताब्दी में हुआ। भारतीय संगीत शास्त्र (Theory) उस समय तक संस्कृत भाषा में होने के कारण मुसलमान उसे समझने में असमर्थ रहे, फिर भी गायन वादन (क्रियात्मक संगीत) में उन्होंने अच्छी उन्नति की। नये-नये रागों का आविष्कार

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 05 | October - December 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

किया एवं तरह-तरह के नवीन संगीत वाद्य बने, जिनका तत्कालीन मुस्लिम बादशाहों द्वारा आदर हुआ और गायक-वादकों का सम्मान होने लगा।

इसके बाद 12 वीं शताब्दी में संगीत की दशा विशेष अच्छी नहीं रही, क्योंकि इस काल में मुहम्मद गौरी तथा अन्य मुस्लिमों द्वारा हिंदू राजाओं से युद्ध होता रहा, जिसके कारण देश में अव्यवस्था फैली, अतः संगीत प्रचार के मार्ग में भी बाधा पड़ना स्वाभाविक ही था।

12 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जयदेव कृत "गीत गोविन्द" नामक संस्कृत के एक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना हुई। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि और संगीतज्ञ जयदेव है, जिन्हें उत्तर भारत का प्रथम गायक होने का सम्मान प्राप्त था गीत गोविंद में राधा-कृष्ण संबंधी प्रबंध गीत है, जिन्हें आज भी अनेक गायक ताल-स्वरों में बांधकर गाते है। जयदेव कवि का जन्म बंगाल में बोलपुर के निकटस्थ केन्दुला नामक स्थान में हुआ था, जहा पर अब भी प्रतिवर्ष संगीत समारोह मनाया जाता है।

(4) आधुनिक काल (अंग्रेजी राज्य)

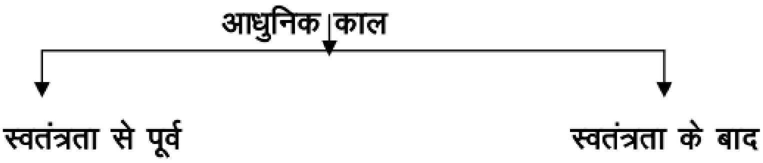

अंग्रेज, भारतीय संगीत को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे, साथ ही साथ अंग्रेजी शब्द सभ्यता का प्रभाव रियासतों पर भी पड़ने लगा। जिसके फलस्वरूप राजा लोग भी संगीत के प्रति उदासीनता का भाव प्रकट करने लगे और इस प्रकार रियासतों से संगीतज्ञो को आश्रय प्राप्त हो रहा था उसमें बाधा पड़ने लगी। फिर भी कुछ खास खास रियासतों में विभिन्न घरानों के संगीतज्ञ संगीत साधना में तल्लीन रहे। साथ ही उन दिनों संगीत का प्रवेश भले घरों में निषिद्ध माना जाने लगा, इसका भी एक विशेष कारण था कि इस समय में शासन वर्ग की

उदासीनता के कारण संगीत कला निकृष्ट श्रेणी के व्यवसायी स्त्री पुरुषों में पहुंच चुकी थी। अतः नवीन शिक्षा प्राप्त सभ्य समाज का इसके प्रति उपेक्षा रखना स्वाभाविक ही था। किंतु संगीत के भाग्य ने फिर पलटा खाया और कुछ प्रसिद्ध अंग्रेजों (सर विलियम जोन,कैप्टन डे ,कैप्टन विलर्ड आदि) ने भारतीय संगीत का अध्ययन करके इस पर कुछ पुस्तकें लिखी, जिनका प्रभाव शिक्षित वर्ग पर अच्छा पडा और संगीत के प्रति अनादर का भाव धीरे-धीरे घटने लगा।

संगीत प्रचार का आधुनिक काल (1900- 1950 ई.)

इस आधुनिक काल में संगीत उद्धार और प्रचार का श्रेय भारत की दो महान विभूतियों को है, जिनके शुभ नाम है पंडित श्री विष्णु नारायण भातखंडे और पंडित श्री विष्णु दिगंबर पलुस्कर। दोनों ही महानुभावों ने देश में जगह-जगह पर्यटन कर के संगीत कला का उद्धार किया। जगह-जगह अनेक संगीत विद्यालयों की स्थापना की। संगीत सम्मेलनों द्वारा संगीत पर विचार विनिमय हुए जिसके फलस्वरूप जनसाधारण मैं संगीत की रूचि विशेष रूप से उत्पन्न हुई। इस काल में शास्त्रीय साधना के साथ-साथ संगीत में नवीन प्रयोग द्वारा एक विशेषता पैदा करने का श्रेय विश्वकवि श्री रविंद्रनाथ ठाकुर को है , इन्होंने प्राचीन राग रागिनीयों के आकर्षक व समुदाय लेकर तथा अन्य कलात्मक प्रयोग द्वारा 'रविंद्र संगीत' के रूप में एक नई चीज संगीत प्रेमियों को दी।

स्वतंत्र भारत में संगीत

भारत स्वतंत्र होकर जब से अपनी राष्ट्रीय सरकार साबित हुई है, तब से संगीत का प्रचार द्रुतिगति से देश में बढ़ रहा है। जगह-जगह स्कूल और कॉलेजों में संगीत पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो गया है, एवं कुछ विश्वविद्यालय की बी.ए. परीक्षाओं में संगीत भी एक विषय के रूप से रख दिया गया है। इधर रेडियो द्वारा भी संगीत का प्रचार दिनों दिन बढ़ रहा है।

कुछ सिनेमा फिल्मों से भी हमें अच्छा संगीत मिल सका है। संगीत के अनेक शिक्षण संस्थाएं भी विभिन्न नगरों में सुचारू रूप से चल रही है। देश का शिक्षित वर्ग संगीत की और विशेष रूप से आकृष्ट होकर अब संगीत का महत्व समझा समझने लगा है। कुलिन घराणे के युवक युवती और कन्याए संगीत शिक्षा ग्रहण कर रही है। एवं जनसाधारण में भी संगीत के प्रति आशातीत अभिरुचि उत्पन्न हो रही है। इधर संगीत संबंधी पुस्तकें भी अच्छी-अच्छी प्रकाशित होने लगी है संगीत कला के विकास के लिए यह सब शुभ लक्षण है, आशा है निकट भविष्य में ही भारतीय संगीत उच्चतम शिखर पर आसीन होकर अपनी विशेषताओं से संसार का मार्गदर्शन करेगा।

निष्कर्ष:

सृष्टि के प्रारम्भ से ही इसके प्रत्येक युग में संगीत के धार्मिक तथा सामाजिक उत्सवों के मनाने की परम्परा रही है। इन संगीत उत्सवों ने उस काल की संगीत कला को संरक्षित करने के साथ-साथ उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अतः वैदिक काल में समन, पौराणिक काल में समज्जा, महाकाव्य काल में विभिन्न सांगीतिक उत्सव जैसे- पुष्प चयन, जल क्रीड़ा, उद्यान क्रीड़ा, बौद्ध काल में गिरग्ग, समज्ज तथा मौर्य काल, कनिष्क काल तथा गुप्त काल में संगीत उत्सवों के दरबारी स्वरूप के आरम्भ ने निरंतर इन संगीत उत्सवों के आयोजन के स्वरूप तथा उद्देश्यों में परिवर्तन तथा विकास ने इन्हें और भी समृद्ध किया जिससे न केवल संगीत कला का विकास हुआ बल्कि संगीत कला के विद्वानों को भी कला प्रदर्शन तथा अपनी कला का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान किया, जिससे भारतीय संगीत तथा संस्कृति को दृढ़ आधार तथा विकास दिया है और संगीत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित करने का साधन भी दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. शर्मा, भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस-2010
2. परांजपे, शरच्चन्द्र श्रीधर, भारतीय संगीत का इतिहास, प्रकाशक -चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी-2015
3. पुरी मृदुला, संगीत मीमांसा, प्रकाशक - सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-2007
4. तोमर, अवधेष प्रताप सिंह, संगीत शासत्र सुरसरि, प्रकाशक -कृष्णा कम्प्यूटर सागर-2012
5. मिश्रा, जया, वर्तमान सामाजिक परिवर्तन में संगीत की नई भूमिका, प्रकाशक - अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहाबाद-2012
6. शर्मा जया, पंडित भातखंडे के ग्रन्थों का संगीत-शिक्षण में योगदान, प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली-2012
7. संगीत मसिक पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथस्स।
8. चौधरी, डा0 सुभाष रानी, संगीत के अगृख शास्त्रीय सिद्धान्त कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली।